

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे

॥ त्रयोविंशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ त्रयोविंशः सर्गः ॥

श्रीरामेण लम्बणं प्रति विनाशसूचकानां लम्बणानां वर्णनं लम्बां
प्रत्याक्रमणं च

निमित्तानि निमित्तञ्ज्ञे दृष्ट्वा लम्बणपूरजः।
सौमित्रिं सम्परिभ्रज्य इदं रचनमब्रवीत् ॥ 6.23.1 ॥

परिगृह्योदकं शीतं वनानि फलवन्ति च।
बलौघं संविभजेयमं ब्रूय त्रिष्टेम लम्बण ॥ 6.23.2 ॥

लोकक्षयकरं तीमं भयं पश्याम्युपस्थितम्।
प्रवर्हणं प्रवीरणाम्बरानररक्षसाम् ॥ 6.23.3 ॥

राताश्च कलुषा वान्ति कम्पते च वसुधरा।
परतात्राणि वेपन्ते पतन्ति च महीरुहाः ॥ 6.23.4 ॥

मेघाः क्रव्यादसङ्काशाः परुषाः परुषस्वनाः।
क्रूराः क्रूरं प्रवर्षन्ति मिश्रं शोणितविन्दुभिः ॥ 6.23.5 ॥

रञ्जचन्दनसङ्काशा सक्त्या परमदारुणा।
ज्वलतः प्रपतत्येतदादित्यादग्निमण्डलम् ॥ 6.23.6 ॥

दीना दीनस्वराः क्रूराः सर्वतो मृगपङ्क्तिः।
प्रत्यादित्यं विन्दन्ति जनयन्तो महद्वयम् ॥ 6.23.7 ॥

রজন্যামপ্রকাশস্ত সন্তাপযতি চন্দ্রমাঃ।
কৃষ্ণরক্তাংশুপর্যন্তো লোকক্ষয় ইরোদিতঃ ॥ 6.23.8 ॥

হ্রস্বো রুক্ষোহপ্রশস্তশ্চ পরিবেষস্ত লোহিতঃ।
আদিত্যে রিমলে নীলং লক্ষ্ম লক্ষ্মণ দৃশ্যতে ॥ 6.23.9 ॥

রজসা মহতা চাপি নক্ষত্রাণি হতানি চ।
যুগান্তমির লোকানাং পশ্য শংসন্তি লক্ষ্মণ ॥ 6.23.10 ॥

কাকাঃ শ্যেনাস্থথা নীচা গৃধ্ৰাঃ পরিপতন্তি চ।
শিরাশ্চাপ্যশুভান্ নাদান্ নদন্তি সুমহাভযান্ ॥ 6.23.11 ॥

শৈলৈঃ শূলৈশ্চ খড়্গৈশ্চ রিমুক্তৈঃ কপিরাক্ষসৈঃ।
ভরিষ্যত্যারূতা ভূমির্মাংসশোণিতকর্দমা ॥ 6.23.12 ॥

ক্ষিপ্ৰমদৈর্য দুর্ধর্ষাং পুরীং রারণপালিতাম্।
অভিযাম জরেনৈর সর্ৱৈর্হরিভিরারূতাঃ ॥ 6.23.13 ॥

ইত্যেরমুকত্বা ধন্বী স রামঃ সঙ্গ্রামধর্ষণঃ।
প্রতস্থে পুরতো রামো লক্ষ্মামভিমুখো রিভুঃ ॥ 6.23.14 ॥

সরিভীষণসুগ্রীরাঃ সর্ৱে তে রানরর্ষভাঃ।
প্রতস্থিরে রিনর্দন্তো ধৃতানাং দ্বিষতাং রধে ॥ 6.23.15 ॥

রাঘরস্য প্রিয়ার্থং তু সুতরাং রীর্ষশালিনাম্।
হরীণাং কর্মচেষ্টাভিস্তুতোষ রঘুনন্দনঃ ॥ 6.23.16 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীয়ে আদিকার্যে যুদ্ধকাণ্ডে ত্রয়োবিংশঃ সর্গঃ ॥